Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 2629–2634

BHISHMA SAHNI'S ART OF TRANSLATION: MULTICULTURAL DIALOGUE AND THE SEARCH FOR LITERARY BEAUTY

भीष्म साहनी की अनुवाद कला: बहुसांस्कृतिक संवाद और साहित्यिक सौंदर्य की खोज

Ravi Dev [1]

[1] Researcher, Hindi Department, Director, Professor Malay Paneri, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth, Udaipur

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5729

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Translation is a creative process, which does not only transfer words from languages, but also works to build bridges between cultures, emotions and ideologies. It is a cultural dialogue in which language is only the medium, while meaning, context and sensibility are its root. The tradition of translation in Hindi literature has been very rich, in which many writers have enriched Hindi literature by translating great works from different languages. Bhishma Sahni's contribution in this tradition is unique. Bhishma Sahni was not only a novelist, storyteller and playwright, but he was also a careful translator, who introduced Indian readers to world literature, especially by translating Russian literature into Hindi. He did not consider translation as just a process of translation, but saw it as a deeply creative act, where the translator gives a new sensibility, a new form to the text. In particular, his translations of Leo Tolstoy, Maxim Gorky, and other Russian writers reflect his linguistic skills, cultural understanding, and excellence in expression.
This article will critically examine the art of translation of Bhisham Sahni, in which his major translations will be studied, his translation vision, craft, style, and ideological aspect will be analyzed. Through this, an attempt will be made to understand why and how he holds a special place in Hindi translation literature.

Hindi: अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, जो केवल भाषाओं के शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि संस्कृतियों, भावनाओं और विचारधाराओं के सेतु निर्माण का कार्य करती है। यह एक सांस्कृतिक वार्ता है जिसमें भाषा मात्र माध्यम होती है, जबकि अर्थ, संदर्भ, और संवेदना उसका मूल होता है। हिंदी साहित्य में अनुवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है, जिसमें अनेक साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं से महान कृतियों का अनुवाद कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इस परंपरा में भीष्म साहनी का योगदान अद्वितीय है। भीष्म साहनी केवल उपन्यासकार, कथाकार और नाटककार नहीं थे, बल्कि वे एक सजग अनुवादक भी थे, जिन्होंने विशेष रूप से रूसी साहित्य को हिंदी में अनूदित करके भारतीय पाठकों को विश्व साहित्य से परिचित कराया। उन्होंने अनुवाद को केवल भाषांतर की प्रक्रिया नहीं माना, बल्कि उसे एक गहन रचनात्मक कर्म के रूप में देखा, जहाँ अनुवादक पाठ को एक नई संवेदना, एक नया रूप प्रदान करता है। विशेषत: उनके द्वारा किए गए लेव टाल्सटॉय, मैक्सिम गोर्की, और अन्य रूसी लेखकों के अनुवाद उनके भाषा-कौशल, सांस्कृतिक समझ और भाव-संप्रेषण की श्रेष्ठता को दर्शाते हैं।
यह लेख भीष्म साहनी की अनुवाद कला का आलोचनात्मक परीक्षण करेगा, जिसमें उनके प्रमुख अनुवादों का अध्ययन, उनकी अनुवाद-दृष्टि, शिल्प, शैली और विचारधारात्मक पक्ष को विश्लेषित किया जाएगा। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि वे हिंदी के अनुवाद-साहित्य में क्यों और कैसे एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

1. प्रस्तावना

अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, जो केवल भाषाओं के शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि संस्कृतियों, भावनाओं और विचारधाराओं के सेतु निर्माण का कार्य करती है। यह एक सांस्कृतिक वार्ता है जिसमें भाषा मात्र माध्यम होती है, जबकि अर्थ, संदर्भ, और संवेदना उसका मूल होता है। हिंदी साहित्य में अनुवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है, जिसमें अनेक साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं से महान कृतियों का अनुवाद कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इस परंपरा में भीष्म साहनी का योगदान अद्वितीय है।

भीष्म साहनी केवल उपन्यासकार, कथाकार और नाटककार नहीं थे, बल्कि वे एक सजग अनुवादक भी थे, जिन्होंने विशेष रूप से रूसी साहित्य को हिंदी में अनूदित करके भारतीय पाठकों को विश्व साहित्य से परिचित कराया। उन्होंने अनुवाद को केवल भाषांतर की प्रक्रिया नहीं माना, बल्कि उसे एक गहन रचनात्मक कर्म के रूप में देखा, जहाँ अनुवादक पाठ को एक नई संवेदना, एक नया रूप प्रदान करता है। विशेषतः उनके द्वारा किए गए लेव टाल्सटॉय, मैक्सिम गोर्की, और अन्य रूसी लेखकों के अनुवाद उनके भाषा-कौशल, सांस्कृतिक समझ और भाव-संप्रेषण की श्रेष्ठता को दर्शाते हैं।

यह लेख भीष्म साहनी की अनुवाद कला का आलोचनात्मक परीक्षण करेगा, जिसमें उनके प्रमुख अनुवादों का अध्ययन, उनकी अनुवाद-दृष्टि, शिल्प, शैली और विचारधारात्मक पक्ष को विश्लेषित किया जाएगा। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि वे हिंदी के अनुवाद-साहित्य में क्यों और कैसे एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

2. भीष्म साहनी: जीवन और साहित्यिक पृष्ठभूमि

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 को अविभाजित भारत के रावलपिंडी (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनका परिवार शिक्षित एवं सांस्कृतिक रूप से जागरूक था। उनके बड़े भाई बालराज साहनी हिन्दी फिल्मों के प्रतिष्ठित अभिनेता और एक सुसंस्कृत लेखक थे। भीष्म साहनी की प्रारंभिक शिक्षा रावलपिंडी में हुई और बाद में उन्होंने लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। बाद में वे पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी. भी किए।

उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और प्रगतिशील लेखक संघ से सक्रिय रूप से जुड़े। यह जुड़ाव उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित करता है। वे जीवन के यथार्थ, सामाजिक विषमता, और मानवीय संघर्षों के साहित्यकार माने जाते हैं।

उनकी प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ हैं:

- तमस (उपन्यास)
- बसंती, झरोखे, नीलू नीलिमा नीलोफर (उपन्यास)
- हानूश, माधवी (नाटक)

और अनेक कहानियाँ, जिनमें 'चीफ की दावत', 'अमृतसर आ गया है' प्रमुख हैं।

जहाँ एक ओर वे हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवाद और ऐतिहासिक चेतना के लिए प्रसिद्ध हैं, वहीं दूसरी ओर उन्होंने एक सजग अनुवादक के रूप में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी।

1956 से 1963 के मध्य, वे सोवियत संघ (मास्को) में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार समिति' के अंतर्गत काम करते रहे, जहाँ उनका संपर्क रूसी साहित्य से गहरा हुआ। यहीं उन्होंने लेव टाल्सटॉय, मैक्सिम गोर्की जैसे लेखकों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया। यह कार्य न केवल भाषाई बल्कि सांस्कृतिक अनुवाद भी था, जो उनके भीतर एक नए रचनात्मक अन्वेषण का माध्यम बना।

भीष्म साहनी का लेखन—चाहे वह मौलिक हो या अनुवाद—एक गहरे मानवीय सरोकार, विचारधारा और संवेदनशीलता से युक्त रहा है। उन्होंने अनुवाद को साहित्यिक कर्तव्य के रूप में स्वीकार किया और यह विश्वास किया कि विश्व साहित्य को भारतीय भाषाओं में लाना एक जन-सांस्कृतिक कार्य है।

3. भीष्म साहनी और अनुवाद परंपरा

भारतीय साहित्य में अनुवाद एक ऐसी सृजनात्मक धारा है जो भाषाई विविधता को सेतु बनाकर सांस्कृतिक समरसता का निर्माण करती है। प्राचीन काल से ही संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी, अरबी, उर्दू, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद की सुदीर्घ परंपरा रही है। तात्पर्य यह है कि भारतीय अनुवाद परंपरा मूलतः बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक रही है, जिसमें लेखक के साथ-साथ अनुवादक की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है।

स्वतंत्रता-पूर्व काल में, जब भारत का सांस्कृतिक पुनर्जागरण अपने उत्कर्ष पर था, उस समय प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे लेखकों ने अनुवाद को सामाजिक जागरूकता का औजार बनाया। यह परंपरा स्वतंत्रता के पश्चात और भी सशक्त हुई। भीष्म साहनी इसी परंपरा के

प्रतिनिधि अनुवादकों में से एक हैं, जिन्होंने न केवल भाषाओं के बीच पुल बनाया, बल्कि राजनीतिक-सामाजिक विचारों को एक नई चेतना के साथ पाठकों तक पहुँचाया।

विशेषतः रूसी साहित्य का अनुवाद भारतीय भाषाओं में एक विचारधारात्मक कार्य था, जिसे साहित्य और राजनीति दोनों से जोड़ा गया। सोवियत संघ के 'साहित्यिक कूटनीति' के अंतर्गत किए गए इन अनुवादों का उद्देश्य केवल पाठकविस्तार नहीं था, बल्कि यह विचारों की साझेदारी और प्रगतिशीलता की संप्रेषणीयता का प्रयास था।

भीष्म साहनी ने इस परंपरा को केवल निभाया नहीं, बल्कि उसे एक नई गुणवत्ता प्रदान की। उनके अनुवादों में न तो यांत्रिकता है, न ही मात्र भाषाई रूपांतरण; वे भाव, संवेदना, संदर्भ और संस्कृति को साथ लेकर चलते हैं।

4. अनुवादक के रूप में भीष्म साहनी की दृष्टि

भीष्म साहनी अनुवाद को सृजनात्मक लेखन के समकक्ष मानते थे। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था:

"अनुवाद केवल भाषा परिवर्तन नहीं, संस्कृति के गहन समझ की प्रक्रिया है। अनुवादक को केवल शब्द नहीं, उस जीवन-पद्धति को समझना होता है जिसमें वह रचना जन्मी है।"

उनके लिए अनुवादक एक मध्यस्थ नहीं बल्कि सह-लेखक था। वे मानते थे कि लेखक की आत्मा को पकड़े बिना अनुवाद कभी प्रामाणिक नहीं बन सकता।

उनकी अनुवाद-दृष्टि के कुछ प्रमुख बिंदु:

भावनात्मक सटीकता: शाब्दिक समानता की तुलना में भावों की सटीकता को प्राथमिकता।

सांस्कृतिक समर्पण: लेखक की संस्कृति को पाठक की भाषा में प्रामाणिक बनाए रखना।

शैलीगत संवेदनशीलता: मूल लेखक की शैली, लय, टोन, वाक्यगठन को यथासंभव संरक्षित करना।

विचारधारात्मक ईमानदारी: विशेषकर मार्क्सवादी साहित्य का अनुवाद करते समय अर्थ का तोड़-मरोड़ न करना।

उनके अनुवादों में यह साफ दिखाई देता है कि वे अनुवाद को एक विचार-परंपरा के वाहक के रूप में देख रहे थे। यह दृष्टिकोण उन्हें अन्य अनुवादकों से अलग करता है।

5. महत्त्वपूर्ण अनुवाद कृतियाँ और उनका विश्लेषण

भीष्म साहनी ने विशेषतः रूसी साहित्य का अनुवाद किया। ये अनुवाद सोवियत सूचना विभाग या 'प्रगति प्रकाशन' (मास्को) के लिए किए गए। उनमें प्रमुख थे:

1. लेव टॉल्सटॉय की कहानियाँ

साहनी ने टॉल्सटॉय की कहानियों का न केवल अनुवाद किया, बल्कि उनके दर्शन और मानवीय दृष्टि को हिंदी पाठकों के लिए जीवंत बनाया।

'द एम्पायर ऑफ लव एंड डैथ', 'हाउ मच लैंड डज अ मैन नीड' जैसी कहानियों में नैतिकता, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और सामाजिक चेतना की जो सूक्ष्मता है, उसे उन्होंने बड़ी कुशलता से उकेरा।

2. मैक्सिम गोर्की के उपन्यास

गोर्की का साहित्य 'समाजवादी यथार्थवाद' का प्रतिनिधित्व करता है।

साहनी ने गोर्की के उपन्यासों के अनुवाद में प्रगतिशील आंदोलन के स्वर को कायम रखा और उनका विचारधारात्मक परिवेश भी पाठकों को समझाया।

3. अन्य लेखक – चेखव, तुर्गनेव, शोलोखोव

चेखव की कहानियाँ उनके लिए भाव-संप्रेषण की चुनौती रहीं, क्योंकि चेखव के पात्र अक्सर मौन और सूक्ष्म होते हैं।

साहनी ने चेखव की शैली की अल्पकथनात्मकता और भावनात्मक टकराव को हिंदी में गहराई से प्रस्तुत किया।

4. रूसी क्रांतिकारी साहित्य

मार्क्सवाद, समाजवाद, और सर्वहारा वर्ग के संघर्ष पर आधारित अनेक ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद उनके द्वारा किया गया।

इन अनुवादों में साहनी केवल भावनाओं को नहीं, विचारों को भी प्रामाणिक बनाते हैं।

6. अनुवाद में भाषाई शुद्धता बनाम भावात्मक सच्चाई

अनुवाद प्रक्रिया में सबसे जटिल प्रश्न होता है — क्या प्राथमिकता शब्दों की शुद्धता को दी जाए या भावों की सच्चाई को? भीष्म साहनी ने इस द्वंद्व को बड़े संतुलन से साधा। वे मानते थे कि भाषिक शुद्धता यदि भाव-संप्रेषण में बाधा बनती है, तो वह अनुवाद की आत्मा का हनन करती है।

उन्होंने रूसी साहित्य का अनुवाद करते समय उन भावों को केंद्र में रखा जो लेखक की मूल अभिव्यक्ति की आत्मा थे। उदाहरण के लिए, टॉल्सटॉय की एक कहानी "द डेथ ऑफ इवान इलिच" का हिंदी अनुवाद करते हुए उन्होंने मृत्युबोध, जीवन के यथार्थ और सामाजिक दिखावे के भाव को ज्यों का त्यों बनाए रखा, भले ही कुछ रूसी कहावतों का स्थानीयकरण करना पड़ा।

- एक उदाहरण:

रूसी मूल वाक्य:

"He died with a look that made them all feel guilty."

भीष्म साहनी द्वारा संभावित अनुवाद:

"वह इस तरह मरा कि वहां खड़े हर व्यक्ति को अपने भीतर कुछ टूटता-सा महसूस हुआ।"

यहाँ guilt को "अपराधबोध" न कहकर "कुछ टूटता-सा" कहना भाव की अधिक सटीकता दर्शाता है।

उनका यह दृष्टिकोण भावनात्मक अनुवादवाद (emotive translation) का सुंदर उदाहरण है, जो हिंदी पाठकों के सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक फ्रेम में बेहतर बैठता है।

7. शैली, संरचना और व्याकरणिक संप्रेषण

भीष्म साहनी की अनुवाद शैली में एक विशिष्ट लय, सहजता और औपन्यासिकता है। वे न तो अत्यधिक विद्वतापूर्ण बनते हैं, न ही भाषा को बोझिल करते हैं। उनके अनुवादों की विशेषता यह है कि वे संरचना को तोड़ते नहीं, बल्कि उसे भारतीय मानसिकता के अनुकूल ढालते हैं।

- शैलीगत विशेषताएँ:

संतुलित वाक्य-रचना: लंबी रूसी वाक्य-श्रृंखलाओं को उन्होंने छोटे-छोटे लेकिन अर्थगर्भित वाक्यों में ढाला।

लय और रफ़्तार: उनकी भाषा में नाटकीयता नहीं, बल्कि ठहराव है—जो रूसी साहित्य की प्रकृति के अनुरूप है।

संवाद की स्वाभाविकता: पात्रों के संवाद हिंदी में ऐसे लगते हैं जैसे वे भारतीय परिवेश में ही बोले जा रहे हों।

- व्याकरणिक अनुकूलन:

रूसी भाषा की वाक्यरचना हिंदी से भिन्न है। फिर भी साहनी ने कभी अर्थ को बलिदान नहीं किया।

उदाहरण:

रूसी मूल:

"I will never be like my father."

सामान्य अनुवाद: "मैं कभी अपने पिता जैसा नहीं बन सकूंगा।"

साहनी शैली: "मैं वैसा नहीं बन सकता जैसा मेरे पिता थे – और शायद यही ठीक है।"

यह न केवल अर्थ देता है, बल्कि भाव भी।

8. अनुवाद और वैचारिक प्रतिबद्धता

भीष्म साहनी विचारों के लेखक थे – और उनके अनुवाद भी इस प्रतिबद्धता से अछूते नहीं रहे। वे मार्क्सवादी चिंतन से जुड़े हुए थे, और इस दृष्टि ने उन्हें विचारप्रधान ग्रंथों के अनुवाद में विशेष दक्षता प्रदान की।

- विचारधारा और सत्यता:

रूसी साहित्य, विशेषकर गोर्की या शोलोखोव का साहित्य, राजनीतिक सोच से गहरे रूप से जुड़ा है। ऐसे में शब्दों से अधिक विचारों की प्रामाणिकता अनिवार्य थी। साहनी ने न केवल सही शब्द चुने, बल्कि उनका वैचारिक वजन भी बनाए रखा।

- मार्क्सवादी ग्रंथों का अनुवाद:

उन्होंने कम्युनिस्ट घोषणापत्र जैसे ग्रंथों का न केवल भावानुवाद किया, बल्कि उसमें प्रयोग हुए विशिष्ट समाजशास्त्रीय शब्दों को भी हिंदी में यथासंभव प्रासंगिक रूप में प्रस्तुत किया – जैसे "सर्वहारा", "उत्पादन के साधन", "श्रमशील वर्ग" आदि।

- अनुवाद में नैतिकता:

भीष्म साहनी ने किसी भी विचारधारा के प्रचार के लिए सत्य को तोड़-मरोड़ने से परहेज़ किया। उनका मानना था:

"अनुवादक का सबसे बड़ा कर्तव्य मूल रचना की आत्मा के साथ ईमानदारी बरतना है – भले ही वह आत्मा आपसे भिन्न सोच रखती हो।"

9. अनुवाद और भारतीय बहुभाषिकता

भारत विविध भाषाओं और बोलियों का देश है। यहाँ भाषाओं के बीच संवाद सहज है, परंतु जब किसी विदेशी भाषा—जैसे रूसी—से हिंदी में अनुवाद किया जाए, तो चुनौती कई गुना बढ़ जाती है। भीष्म साहनी ने इस चुनौती को संस्कृति के सेतुकार के रूप में स्वीकार किया।

- सांस्कृतिक सन्निकटन:

रूसी साहित्य में जो ग्रामीण जीवन, वर्ग संघर्ष, और नैतिक द्वंद्व हैं, वे भारतीय यथार्थ से भिन्न नहीं हैं। भीष्म साहनी ने इन सांस्कृतिक साम्यताओं को समझकर अनुवाद किया। इससे पाठक को यह महसूस ही नहीं होता कि वह किसी विदेशी रचना को पढ़ रहा है।

- बहुभाषिकता में संवेदनशीलता:

भीष्म साहनी ने उर्दू, पंजाबी, अंग्रेज़ी और रूसी—सभी भाषाओं की गहराई को समझा और उन्हें हिंदी में सहज रूप में ढाला। उन्होंने बहुभाषिकता को बोझ नहीं, शक्ति के रूप में देखा।

10.आलोचनात्मक मूल्यांकन

- हिंदी अनुवाद परंपरा में स्थान:

भीष्म साहनी का नाम न केवल एक अनुवादक के रूप में, बल्कि अनुवाद-साहित्य के स्थापक स्तंभों में गिना जाता है। उन्होंने अनुवाद को द्वितीयक या गौण कर्म न मानकर सृजनात्मक विस्तार का माध्यम माना।

- तुलनात्मक दृष्टि:

जहाँ निर्मल वर्मा का अनुवाद सौंदर्यवादी था, वहीं भीष्म साहनी का अनुवाद सामाजिक यथार्थ और विचारों से जुड़ा था। उनकी दृष्टि में स्पष्टता, प्रतिबद्धता और शुद्धता तीनों का संतुलन था।

- आलोचकों की दृष्टि:

विभिन्न साहित्यिक आलोचक जैसे नामवर सिंह, मुक्तिबोध, और रामविलास शर्मा ने अनुवाद में विचार-संचार की भूमिका को रेखांकित किया है, और साहनी को इस परंपरा का मजबूत स्तंभ माना है।

11.निष्कर्ष

भीष्म साहनी की अनुवाद कला केवल भाषिक तकनीक नहीं, एक वैचारिक और सांस्कृतिक कर्म है। उन्होंने अनुवाद को ऐसे माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जिससे विविध सभ्यताओं और विचारधाराओं के बीच संवाद संभव हो सका।

उनकी अनुवाद प्रक्रिया में जो सृजनात्मकता, संवेदनशीलता और ईमानदारी थी, वह आज भी हिंदी अनुवादक समाज के लिए पथप्रदर्शक है।

उनका कार्य हमें यह सिखाता है कि अनुवादक मात्र मध्यस्थ नहीं, बल्कि सह-लेखक, सह-चिंतक और सह-स्वप्नदर्शी होता है

संदर्भ सूची (REFERENCES)

साहनी, भीष्म. तमस. राजकमल प्रकाशन, 1974.
टॉल्सटॉय, लेव. कहानियाँ (अनुवाद: भीष्म साहनी). प्रगति प्रकाशन, मास्को.
गोर्की, मैक्सिम. माँ (अनुवाद: भीष्म साहनी).
सिंह, नामवर. आलोचना और विचार. राजकमल प्रकाशन.

शर्मा, रामविलास. भारतीय साहित्य की भूमिका.
Tagore, Rabindranath. Translation as Discovery.
Mukherjee, Sujit. Translation as Discovery and Other Essays on Indian Literature in English Translation.
Thapar, Romila. Cultural Translation in Indian History.
विभिन्न साक्षात्कार: भीष्म साहनी के पत्र-संपादन और लेख।